1886957

कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या

B.S.E.R. A

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय .... हिन्दी साहित्य

परीक्षा का दिन........ शनिवार

दिनांक 5/04/25

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	15	19	5
2	6	20	5
3	6	21	6
4	6	22	
5	2	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	2	योग	80
15	2	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	3	80	अस्सी
18	3		

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 180/2025

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिव
उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त
सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामां
   नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचि
   साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ
   होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक
   क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनि
   उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं ह
   चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परी
   समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक
1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ क
उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार
त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - [अ]

प्र॰1 बहुविकल्पात्मक प्रश्न -

(i) (अ) भैरो

(ii) (स) पोटली

(iii) (ब) बेर

(iv) (अ) 35 इंच

(v) (द) प्रभाष जोशी

(vi) (ब) घनानंद

(vii) (द) विद्यापति

(viii) (स) भीष्म साहनी

(ix) (स) व्यंग्य

(x) (ब) लोक विश्वासो के नाम पर अंधविश्वास पर।

(P.T.O)

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		(XI) (अ) पुष्पित जंगल देखकर
		(XII) (अ) फ्लैशबैक
		(XIII) (ब) 48 मिनट
15		(XIV) (द) ड्राई - स्कर
		(XV) (स) समाचार पत्र

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र॰2 रिक्त स्थान पूर्ति -

(i) मन्द - मन्द मुरली बजावत अधर धरे, मंद-मंद निकस्यो मुकुन्द मधु - बन ते" पंक्तियो मे माधुर्य गुण है।

(ii) जहाँ व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध शब्द का प्रयोग हो वहाँ च्युतसंस्कृति दोष होता है।

(iii) प्रत्येक चरण मे जगण, तगण, जगण एवं रगण के क्रम मे 12 वर्ण विद्यमान हो वहाँ वंशस्थ छन्द होता है।

(iv) छप्पय छन्द की आन्तिम दो पंक्तियाँ उल्लाला छन्द की होती है।

(v) चुपचाप खड़ी थी वृक्ष-पांत।
सुनती जैसे कुछ निज बात।।
पंक्तियो मे मानवीकरण अलंकार है।

6

(vi) कारण के उपस्थित होने पर भी जब कार्य का न होना वर्णित किया जाये तब, विशेषोक्ति अलंकार होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अपठित गद्यांश

प्र.3

(i) उपयुक्त शीर्षक - भारतीय परम्परा व संस्कार

(ii) भारतीय चित्त जो अनधीनता के रूप में न सोचकर स्वाधीनता के रूप में सोचता है।

(iii) हमारी संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता अपने आप पर अपने आप के द्वारा लगाया हुआ बंधन।

(iv) भले व विवेकी लोग जांच कर लेते हैं, जो हितकर होता है, उसे ग्रहण करते हैं।

(v) मूर्ख लोग वे होते हैं जो दूसरो के इशारे पर भटकते रहते हैं।

(vi) बन्दरिया हमारी आदर्श नही हो सकती क्योंकि वह मरे हुए बच्चे को गोद में दबा रहती है।

6

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र॰4 अपठित पद्यांश

(i) उपयुक्त शीर्षक – रूपसी के ~~चरित्र~~ चरित्र की व रूप सौन्दर्य विशेषता। वर्णन

(ii) रूपसि व्योम (अम्बर) से उत्तर रही है।

(iii) रूपसि के केश सुनहरे व फैले हुए हैं।

(iv) रूपसि निज छाया छवि मे अर्थात स्वयं की छाया मे छिपी हुई है।

(v) रूपसि की वाणी मधुर है।

(vi) पद्यांश की भाषा मधुरता से युक्त व रसायुक्त है इसमे माधुर्य गुण का समावेश है।

6

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - [ब]

प्र॰5 उत्तर भारतेन्दुजी बड़े ही साहित्यिक प्रिय अर्थात साहित्यिक लेखक थे।
शुक्लजी के बाल मे भारतेन्दुजी के संबंध मे इस प्रकार के भाव व छवि बसी हुई थी कि वे राजा हरिश्चन्द्र व हरिश्चन्द्र के बीच अन्तर करना मुश्किल था। अत: भारतेन्दु जी बड़े साहित्कार व सद्गुणो वाले व्यक्ति थे।
उनका व्यक्तित्व व्यवाहारिक था। उससे मिलने के कवि शुक्ल जी काफी उत्सुक थे।

2

प्र॰6 उत्तर ये लोग आधुनिक भारत के नए शरणार्थी है, ऐसा लेखक ने उन विस्तापित लोगो के लिए कहां जिन्हे उनकी जड़-जमीन से अलग कर दिया।
लेखक ने ऐसा इसलिए कहां क्योकि आधुनिक युग मे लोग अपनी स्वार्थपरता व लालचप्रवृत्ति के कारण उपयोगी स्थान से लोगो को विस्तापित कर देते हैं जिससे वे लोग अपना पुश्तैनी आधिकार खो देते हैं।

2

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र: 7

उत्तर

"दुःख ही जीवन की कथा रही। क्या कहूँ आज, जो नही कही" प्रस्तुत पंक्तियो मे निराला के जीवन निम्न पहलु का पता चलता है- निराला ने मृत्यु व दुःख का साक्षात्कार देखा था। उनके जीवन मे दुःख ही विद्यमान था, प्रारम्भ मे माता, पिता, चाचा आदि सब चले बसे और अन्त मे बची निराला की पुत्री सरोज की मृत्यु भी हो गयी, जिसने निराला को अन्दर तक झकझोर दिया। अतः निराला के जीवन मे कुछ कहने व वर्णन करने के लिए नही था उससे जीवन मे तो आखिर तक दुःख ही था।

2

प्र: 8

उत्तर "यह तन जारों ---------- कन्त धरे जहँ पाउ।

प्रस्तुत पंक्तियो मे विरहिणी की मृत्यु के पश्चात भी मिलन की इच्छा व्यक्त हुई है। विरहिणी नायिका पवन से प्रार्थना करती है कि उसकी मृत्यु के पश्चात उसकी राख को उडाकर वहाँ ले जाए जहाँ उसके प्रिय का स्पर्श हो अर्थात उसकी राख भी उसके प्रिय का स्पर्श करना चाहती थी। वह चाहती है उसके पति के पैरो के नीचे उसकी राख चली जाए।

अतः नायिका मृत्यु के बाद भी प्रिय-मिलन की इच्छा प्रकट कर रही है।

2

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र॰9 उत्तर अंधापन ही क्या थोड़ी बिपत थी" ऐसा
सूरदास ने ऐसा इसलिए कहाँ क्योंकि सूरदा
अपने अंधेपन से जितना बेबस व ग्लानि
नही था जितना लोगो से। भैरो ने सूरदास की
झोपड़ी मे आग लगा दी थी, उस समय सूरदा
यह कहता है कि अंधापन क्या थोड़ी विपत्ति
थी जो ऐसा हुआ।
अत: सूरदास अपने अंधेपन से जितना लाचार
व बेबस नही था। जितना लोगो के द्वारा परेश
करने से था।

2

प्र॰10 उत्तर "क्या पशु माताएँ भी ममत्व का सुख दे
पाती होगी? बिस्कोहरकीमाटी पाठ के आधा
पर हमारे विचार निम्न है - व्यक्तियो की तरह
अर्थात मनुष्य की तरह पशुओ मे भी ममत्व
का भाव समाहित होता है जैसा कि पाठ मे
बताया गया है कि दिल्ली के दिलशाह गार्डन मे
बतख अण्डे देते समय पानी से बाहर बाहर
आते है और चारो और से ढक कर अण्डो
को सुरक्षा प्रदान करते है।
अत: पशुओ मे भी ममत्व का भाव गुण सम
होता है जिससे पशु भी माताएँ भी ममत्व
का सुख दे पाती है।

2

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र॰11 उत्तर अन्योक्ति अलंकार :-

जिस अलंकार मे अप्रस्तुत के माध्यम से प्रस्तुत का वर्णन किया जाता हैं, अन्योक्ति अलंकार कहलाता है। इस अलंकार मे जिसे कुछ कहना हो उसे न कहकर अन्य के माध्यम से कहा जाता हैं।

उदाहरण - • माली आवत देखके, कलियन करी पुकार
फुले-फुले चुन लिए, कालई हमारी बार

• नही पराग नही मधुर मधु विकास इहि।

2

प्र॰12 उत्तर पत्रकार को अच्छे लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य चार बाते निम्न हैं -

- पत्रकार को लेखन मे सहज व सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- लेखनशैली शुद्ध व सभी को समझ मे आने वाली होनी चाहिए।
- पत्रकार को भाषा का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए
- पत्रकार को अच्छे लेखन के लिए यह ध्यान रखना चाहिए की उसमे नवीनता हो और वह आकर्षक हो।

2

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र.13 उत्तर कहानी के प्रमुख तत्व निम्न हैं -

- कथानक
- विषय - वस्तु
- पात्र
- समय , वातावरण
- संवाद या घटना स्थल आदि।

2

अत: कहानी का केन्द्र बिन्दु कथानक होता है कहानी की सम्पूर्णता व नीरसता इसी पर टीकी होती हैं।

कहानी किसी व्यक्ति की घटित घटना का वर्णन होता हैं।

BSER-1SO/2025

प्र.14 उत्तर रेडियो की वे खूबियां निम्न हैं जो उसे अन्य माध्यमो से विशिष्ट बनाती हैं -

> रेडियो एक श्रव्य माध्यम हैं। रेडियो से वर्तमान समय की जानकारी ही मिल सकती हैं अतीत की जानकारी इससे नही मिलती हैं

> रेडियो से सूचना प्राप्त करने के लिए निर्धारित समय का ध्यान रखना पड़ता हैं। सुनने वाले को समय सम्बन्धि जानकारी रखना आवश्यक हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

> रेडियो अन्य माध्यमो की भाँति सूचनाओ का संग्रह नही करके रख है रेडियो जनसंचार रूब का एक पुराना माध्यम हैं।

> रेडियो केवल तत्कालीन सूचना पहुँचाता हैं। इसमे कही खुबियाँ होते हुए भी अपनी समय निश्चितता के चलते अन्य माध्यमो से विशिष्ट हैं।

2

प्र.15 उत्तर जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय

भाव पक्ष :- जयशंकर प्रसाद अत्यन्त सौम, शान्त व गम्भीर प्रकृति के थे। यह आत्मस्तुति व परनिन्दा से दूर रहते थे।

साहित्यिक प्रसिद्धि व रचनाएँ :- जयशंकर प्रसाद को साहित्यिक जगत मे काफी प्रसिद्धि मिली इन्होने अनेक रचनाओ का सृजन किया जैसे - कहानी, नाटक, उपन्यास आदि।

2

प्रमुख रचनाएँ :- चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, राजश्री, ध्रुवस्वामिनी (3 नाटक) आदि।
आँधी, इन्द्रजाल, छाया, प्रतिध्वनि (कहानी संग्रह)
कंकाल, तितली, इरावती (उपन्यास)

कला पक्ष (काव्यगत विशेषता) :- इनकी लेखन शैली मे भाषा का कसाव, शब्दो की मितव्यता व

(P.T.O)

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अर्थ की प्रधानता देखने को मिलता है।
इनकी रचनाओ मे विचारो की तजास्विता व बंध की शास्त्रीयता का संगम है।

खण्ड -[स]

प्र:16 उत्तर यह दीप अकेला कविता मे कवि दीप को दीप पंक्ति को देना चाहते है क्योकि एक अकेला दीपक तेल रूपी स्नेह भरा हुआ होता है और वह प्रकाशित होता रहता है अगर उस दीपक को दीपको कि पंक्ति मे शामिल कर दिया जाए तो उसकी सार्थकता और बढ़ जाती है।

दीप के माध्यम से कवि लोगो को समाज से जुड़ने पर बल देते है प्रत्येक व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न व शक्तिमान होता है फिर भी उसकी सार्थकता समाज से जुड़ने पर बढ़ जाता है। कवि अज्ञेय दीप को पंक्ति को देना चाहते है। जिससे उसकी सार्थकता बढ़ जाए।

कवि का मानना है कि व्यक्ति भले ही गुणो से परिपूर्ण परन्तु उसका समाज से जुड़ने पर उसका महत्व व सार्थकता बढ़ जाती है। जिस प्रकार पंक्ति मे को एक दिए दीप का शामिल करने पर उसकी शोभा बढ़ जाती है

7

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र:17 उत्तर शेर लघुकथा के माध्यम से लेखक ने समसामयिक समाज मे स्थापित व्यवस्था पर प्रहार किया है। शेर व्यवस्था का प्रतिक है जिस प्रकार शेर रोजगार का दफ्तर, घास के मैदान आदि बहाने से अन्य भी जानवरो का शोषण करते हैं अर्थात उनकी जीवन लीला ही समाप्त कर देते हैं।

समसामयिक समाज मे सत्तासीन धनाढ्य व पूंजीपती लोग सत्ता का उपभोग कर जनता से झूठे वायदे कर उनका शोषण करता हैं।

शेर की भांति सत्तासीन लोग जनता का आहित करते हैं।

अत: सत्ता का सम्पूर्ण उपभोग विशिष्ट, सत्तासीन व धनाढ्य लोग कर लेते हैं।

अत: लेखक ने समसामयिक समाज मे स्थापित 'व्यवस्था' पर प्रहार शेर लघुकथा के माध्यम से प्रहार किया है।

(3)

प्र:18 उत्तर सूरदास की झोपड़ी नही उसके सपनो की चिता जल रही थी। सूरदास अपने पूरे जीवन भर संचित कर पैसे इगट्ठा किए वे अपने जीवनकाल मे कुछ करना चाहता था - मिठुआ का विवाह, गया जाकर पितरो का पिंडदान व कुंआ ~~कुदवा~~ खुदवाना आदि।

(P.T.O)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सूरदास के यह सपने थे जो वह पूरा करना चाहता था।
सूरदास अपने जीवन भर की कमाई को झोपड़ी मे रख देता है। भैरो द्वारा झोपड़ी मे आग लगाने पर ऐसा लग रहा था जैसे सूरदास की झोपड़ी नही उसके सपनो की चिता जल रही थी।
अत: सूरदास भीख मांगता था वह धीरे-धीरे पैसे इगट्ठे किए थे, परन्तु कुछ ही समय मे वह नष्ट हो गए।
अत: उसकी अभिलाषा व आशाओ व सपनो को चिता जल रही थी।

3

खण्ड - [द]

गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या -

प्र:19 उत्तर

"जी नही, कोई संवाद नही
- - - - मेरी बेटी अकेली।" - - - - - - - - -

शब्दार्थ - मुलाकात - मिलना
गृहस्थी - घर का कार्य
बबुआ - बेटा आदि

(P.T.O)

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश ~~कवि~~ फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचीता कहानी संवदिया से लिया गया है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश मे सवंदिया बड़ी बहुरिया का संवाद लेकर उनके गाँव बिहकंपुर जाने पर जो वार्तालाप हुआ उसी का वर्णन किया गया है।

व्याख्या :- सवंदिया द्वारा बड़ी बहुरिया का संवाद लेकर ~~जाते~~ जाता है बड़ी बहुरिया की मांग द्वारा पूंछने पर वह कहता है कि जी नही कोई सवांद नही लाया हूँ सोचा मिल आता हूँ माँ जी से बस इसी लिए चला आया। बड़ी बहुरियाँ ने कहा है कि यदि छुट्टी हुई तो दशहरा के समय गंगाजी के मेले मे आकर माँ से भेट-मुलाकात कर जाऊंगी, तब बुढी माता चुप रही और हर गोबिन बोला छुट्टी कैसे मिले सारी गृहस्थी बड़ी बहुरिया के ऊपर ही है।

बाद मे बूढी माता बोली, "मै तो बबुआ से एक दिन कह रही थी कि जाकर दीदी को ले आ। वहाँ अब कुछ नही बचा है जमीन-जायदाद तो सब चली गई। तीनो देवर अब शहर मे जाकर बस गए। कोई खोज खबर भी नही लेते मेरी बेटी अकेली है।

विशेष :- • भाषा सहज व सरल है।
• यह कहानी लोकभाषा की नीव पर खड़ी पहाड़ि झरने की तरह गतिमान है।
• बड़ी बहुरिया की बूढ़ी माँ से ममत्व भाव प्रकट -

(P.T.O)

5

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र:20 पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या

उत्तर

तोड़ो तोड़ो - - - - - - - - - - गोड़ो गोड़ो।

शब्दार्थ - ऊसर बंजर - बाधा
खीज - ऊब
गोड़ो - सृजन आदि।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश कवि रघुवीर सहाय' द्वारा रचित तोड़ो कविता से लिया गया है

प्रस्तुत - प्र

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश मे कवि मन मे व्याप्त ऊसर, ऊब को समाप्त कर सर्जन पर बल दिया है।

व्याख्या :-

प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि कहते है कि इस भूमि मे व्याप्त बंजर रूप को समाप्त करो अर्थात मन मे व्याप्त ऊब, को समाप्त करो। इस ऊसर को समाप्त करो जिससे मिट्टी मे रस अर्थात उर्वरता को ले लाओ जिससे बीज उत्पन्न हो सके। अत: इस उद्‌बोधनपरक कविता के माध्यम से कवि मन मे व्याप्त ऊब, को समाप्त कर सृर्जन पर बल दिया है। अत: सारे बंजर रूपी विद्यमान ऊब व खिज को समाप्त कर सर्जन

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

पर बल दिया गया हैं।

विशेष - • भाषा सहज व सरल है।
• प्रेरणादायी कविता है।
• सृजन पर बल दिया गया हैं।

(5)

प्र:21 निबन्ध

—x—

—•— योग का महत्व —•—

संकेत बिन्दु -
• प्रस्तावना
• योग का आशय
• योग का महत्व
• योग की उपयोगिता
• उपसंहार।

• प्रस्तावना - योग प्राचीनकाल से ही हमारी संस्कृति मे योग को बहुत महत्व दिया जाता है। योग करना प्राचीन काल से ही दिया गया एक मंत्र हैं। 'सर्वे भवन्तु सुखीन:' अर्थात सर्व प्रथम हमारी काया ही सर्वोपरि है। स्वास्थ्य हेतु योग अति आवश्यक है। योग दिवस 21 जून को मनाया जाता है।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

"योग अपनाओ, रोग भगाओ"

• योग का आशय :-

योग का आशय है शारिरीक व मानसिक रूप को जोड़ना। योग हमारे शरीर मे सन्तुलन बनाए रखता है। योग का आशय है सन्तुलन बनाए रखना है। योग व्यक्ति को सर्वगुण सम्पन्न बनाता है।

" सन्तोष सबसे बड़ा धन है व स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार ये दोनो योग से ही मिल सकते है। "

• योग का महत्व :-

योग का हमारे जीवन मे बहुत बड़ा महत्व है योग हमे रोगो से मुक्त करता है। योग से हम सब कुछ प्राप्त कर सकते है। योग एक शक्ति की तरह है जो हमे प्रकाशित करता है। प्रतिदिन योग करने से हमे काफी लाभ मिलता है अतः योग का हमारे जीवन मे बहुत महत्व है।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

"परिश्रम करने से गरीबी नही आती
योग करने से रोग नही आता"

• योग की उपयोगीता :- वर्तमान समय कई कारणो से प्रदूषण व अन्य कई प्रकार की ~~प्रदू~~ विपत्तियाँ बिमारियो का प्रकोप बढ़ गया है इससे बचने के लिए योग एक ऐसा स्त्रोत है जिससे हम अपने आप को बचा सकते हैं। अतः योग की मानव जीवन मे बहुत उपयोगीता है। योग को अपनाकर हमें अपने आप ~~स~~ को सुरक्षित रख सकते ~~थे~~ है।

• योग के प्रकार :- योग के कई प्रकार होते हैं ~~योग~~ - सूर्यासन, पद्मासन, ताड़ासन आदि। योग कई प्रकार से किया जाता है योग को प्रातः काल किया जाता है। ~~=~~ अतः प्रतिदिन अपनी योग्यता के अनुसार योग करना चाहिए

"योग भगाए, रोग"

(P. T. O)

6

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उपसंहार :-

मानव जीवन के लिए समसामायिक समय मे योग बहुत जरूरी है।
अतः प्रत्येक मानव व मनुष्य को योग करना चाहिए।
योग की हमारे जीवन मे बहुत उपयोगीता है
योग हमें प्रातः काल करना चाहिए।

"योग एक दवा है' मनुष्य जीवन हेतु"

"योग जीवन प्रदान करना है।"

"योग स्वास्थ्यरूपी उपहार प्रदान करता है

समाप्त

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-1807025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

(80)